हिंदी विभाग (स्नातक सम्मान एवं सामान्य)

कार्यक्रम निष्कर्ष	विकासशील बौद्धिकता,व्यक्तिगत एवं समष्टिगत, प्रभावी संचार माध्यम हेतु, उच्च स्तरीय व्यवहारिक ज्ञान एवं नजरिया बनाने में सहायक ताकि साहित्य एवं भाषा ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को एक कर्तव्य परायण सामाजिक नागरिक के सांचे में ढाला जा सके साथ ही मानवीय जीवन मूल्य सामाजिक कल्याण और कलात्मक योग्यताओंको बढ़ाने में सहायक है।
विशिष्ट कार्यक्रम निष्कर्ष	हमारा स्नातकीय कार्यक्रम विद्यार्थियों की सहायता करता है - १)हिंदी एवं अन्य भागों के सैद्धांतिक आधार को समझने में । २)हिंदी का प्राचीनतम एवं आधुनिक साहित्य इतिहास एवं परिवर्तन को समझने में। ३) हिंदी के मानक रूप और वैज्ञानिक भाषा के रूप में जानने में । ४)व्यवहारिक,पत्रकारिता एवं विज्ञापन में हिंदी की उपयोगिता को समझने में । ५)अनुवाद की उपयोगिता तथा प्राचीन से अब तक के संदर्भ में इसमें आए बदलाव को जानने में। ६)व्याकरणिक एवं वर्ण विचार के लिए। ७) हिंदी से जुड़े बोलियों एवं अन्य भाषा के साथ इसके मिलाप को समझने में।
पाठ्यक्रम निष्कर्ष **सत्र।** **हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)** **आदिकालीन एवं मध्यकालीन काव्य**	पत्र में हिंदी साहित्य के प्राचीन इतिहास के भागों के बारे में जानकारी दी गई है साथ ही नामकरण,काल विभाजन के आधार एवं प्रवृत्तियों को बताया गया है।उक्त काल की राजनीतिक,सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियों को भी बताया गया है। इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को कुछ विशिष्ट काव्य रचनाकारों के उत्कृष्ट रचनाओं को पढ़ने का अवसर मिलता है जिससे साहित्य का इतिहास भरा पूरा हो सका है।

हिंदी विभाग (स्नातक सम्मान एवं सामान्य)

सत्र II **हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)** **आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)**	इस पत्र में हिंदी साहित्य में आए नवजागरण,भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का साहित्य पर प्रभाव,भारतेंदु युग,द्विवेदी युग,छायावाद,छायावादोत्तर काव्य की पृष्ठभूमि प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवियों के बारे में अध्ययन का अवसर मिलता है। इस पत्र के माध्यम से भारतेंदु,अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध',मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी,जयशंकर प्रसाद,सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला',सुमित्रानंदन पंत,महादेवी वर्मा आदि कवियों का जीवन परिचय और उनकी उत्कृष्ट कविताएं पढ़ने का अवसर मिलता है।
सत्र III **भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा** **छायावादोत्तर हिंदी कविता** **हिंदी नाटक एवं एकांकी** **विज्ञापन और हिंदी** **सोशल मीडिया**	इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को भाषा एवं बोली का सामान्य परिचय, भाषा विज्ञान के विभिन्न अंग,ध्वनि विज्ञान के विविध आयाम,हिंदी भाषा का विकास,हिंदी के अंतर्गत अन्य बोलियों तथा राजभाषा,राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के विकास एवं स्वरूप जानकारी दी जाती है। इस पत्र में विद्यार्थी छायावादोत्तर कवियों द्वारा लिखित कविताओं का अध्ययन करते हैं।अरुण कमल, अनामिका,धूमिल,रघुवीर सहाय, नागार्जुन,मुक्तिबोध ,दिनकर, अज्ञेय जी की रचनाएं सम्मिलित हैं। इस पत्र में विविध नाटक एवं एकांकी जोड़े गए हैं,जिसके माध्यम से मानवीय जीवन मूल्यों, पारिवारिक रिश्तों और सामाजिक परिदृश्यों को उद्घाटित किया गया है। विज्ञापन का आज के भूमंडलीकरण में, जहां पूरा विश्व एक बाजार है,क्या महत्व है इसकी जानकारी इस पत्र के माध्यम से दी जाती है।विज्ञापन के प्रकार,उद्देश्य,शैली,उद्योग में इसके महत्व को दर्शाया गया है। आज के आधुनिक जीवन में सोशल मीडिया हर एक के लिए उतनी ही जरूरी है जैसे अन्य सुविधाएं। इंटरनेट, विकीपीडिया,यूट्यूब,फेसबुक के महत्व और उद्देश्य की विस्तृत जानकारी इस पत्र के जरिए मिलती है।

हिंदी विभाग (स्नातक सम्मान एवं सामान्य)

सत्र IV **प्रयोजनमूलक हिंदी**	प्रयोजनमूलक हिंदी अर्थ एवं उपयोगिता, प्रशासनिक पत्राचार एवं व्यवहार, कार्यालय में अन्य भाषाओं के पत्रों का हिंदी में अनुवाद और अनुवाद की समस्याएं और चुनौतियां इस पत्र में संग्रहित है।
हिंदी उपन्यास	इस पत्र के अंतर्गत सेवासदन,मैला आंचल,आपका बंटी और ग्लोबल गांव के देवता उपन्यासों को रखा गया है। जिसके माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं और वास्तविकता से उसके संबंध की अंतर्यात्रा विद्यार्थी मनोरंजन के साथ तय करते हैं।
हिंदी कहानी	इस पत्र में प्रेमचंदयुगीन एवं प्रेमचंदोत्तर कहानियों को जोड़ा गया है। प्रत्येक कहानी ही कालजयी है जो मानवीय जीवनमूल्यों, वास्तविकता और कल्पना के सच्चे मिश्रण से पगी है।
संभाषण कला	एक अच्छा पाठक,अच्छा श्रोता बनता है और अच्छा श्रोता ही अच्छा वक्ता बन पाता है।इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को संभाषण के महत्वपूर्ण सिद्धांत,अच्छे वक्ता के गुण और प्रमुख वक्ताओं के बारे में जानकारी मिलती है।
कार्यालयी हिंदी	जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इस पत्र के माध्यम से कार्यालय और सरकारी तंत्र में हिंदी का जुड़ाव और प्रभाव को बताया गया है। सरकारी विभागों में किस प्रकार हिंदी का अन्य भाषाओं में तथा अन्य का हिंदी में अनुवाद किया जाता है और इसमें क्या-क्या समस्याएं होती है,इसे ही बताया गया है।
सत्र V **भारतीय काव्यशास्त्र**	इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को काव्य के विभिन्न लक्षणों, शब्द शक्तियां (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), रस और रसेत्तर सिद्धांतों के संबंध में विभिन्न आचार्यों के मत एवं विचारों को पढ़ने का अवसर मिलता है।

हिंदी विभाग (स्नातक सम्मान एवं सामान्य)

पाश्चात्य काव्यशास्त्र	भारतीय काव्यशास्त्र के अनुरूप ही इस पत्र के माध्यम से विभिन्न दार्शनिकों के दर्शन विचार और सिद्धांतों को समझने का अवसर मिलता है।साथ ही उदात्तीकरण, मूल्य सिद्धांत,स्वच्छंदतावाद ,मनोविश्लेषणवाद,जैसे सूक्ष्म किंतु रोचक विषयों की जानकारी मिलती है।
अस्मिता मूलक विमर्श और हिंदी साहित्य	इस पत्र के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मूल्य जो किसी न किसी सामाजिक समूह व वर्ग के अस्मिता के लिए शुरू किया गया था, की जानकारी दी जाती है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श ,आदिवासी विमर्श की पृष्ठभूमि,उदय और साठोत्तरी गद्य साहित्य के माध्यम से विकास को पढ़ाया जाता है।
भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच सिद्धांत	आज के सिनेमा जगत के पहले की दुनिया थिएटर और रंगमंच पर आधारित थी,फिर वह चाहे भारतीय समाज अथवा पाश्चात्य।रंगमंच की साहित्य में उपस्थिति और उसके विस्तार का वर्णन इस पत्र के माध्यम से दी गई है।
हिंदी व्याकरण	इस पत्र व्याकरण के कुछ विशिष्ट विषयों की जानकारी दी गई है।यहाँ कुछ चुने हुए विषय (संधि, समास, मुहावरे ,लोकोक्तियां ,अनेक शब्दों के एक शब्द आदि) पढ़ाए जाते हैं जो आज के प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है।
पुस्तक समीक्षा	इस पत्र के अंतर्गत पुस्तक समीक्षा, हिंदी साहित्य में पुस्तक समीक्षा का इतिहास और प्रतिमान की जानकारी दी गई है।साथ ही 'अकाल में सारस' और 'त्यागपत्र'का अवसर मिलता है।
भारतीय साहित्य	इस पत्र के माध्यम से भारतीय साहित्य के स्वरूप और इसके अध्ययन की समस्याएं तथा आज के भारतीय समाज का बिंब किस प्रकार साहित्य में झलकता है,इसकी जानकारी दी गई है।

हिंदी विभाग (स्नातक सम्मान एवं सामान्य)

सत्र VI **हिंदी निबंध तथा अन्य गद्य विधाएं**	इस पत्र में हिंदी निबंध के साथ साथ रेखाचित्र, यात्रा वृतांत आदि को भी जोड़ा गया है,ताकि गद्य की विधाएं भी विद्यार्थियों को पढ़ाई जा सके।
हिंदी आलोचना	इसमें विभिन्न श्रेष्ठ आलोचकों के आलोचनात्मक दृष्टिकोण को दर्शाया गया है जैसे रामचंद्र शुक्ल,हजारी प्रसाद द्विवेदी,नंददुलारे वाजपेयी, नामवर सिंह। इस भाग में आलोचना के विस्तृत इतिहास को जोड़ा गया है।
लोक साहित्य	हमारे समाज और आसपास की संस्कृति भी साहित्य का हिस्सा है और शिष्ट साहित्य के साथ उसका जुड़ाव भी है। लोक साहित्य का वर्तमान साहित्य में उसकी भूमिका और महत्व के साथ भविष्य में उसकी प्रतिष्ठा के बारे में पत्र में जानकारी दी गई है।
भारतीय साहित्य (पाठपरक अध्ययन)	इस पत्र के अंतर्गत कहानी, उपन्यास, निबंध ,आत्मकथा आदि जोड़े गए हैं। वास्तव में यह पत्र मनोरंजन के साथ ज्ञानपरक पाठ के लिए है।
हिंदी भाषी समाज का सर्वेक्षण	छात्रों द्वारा हिंदी भाषी समाज के किसी एक मुहल्ले का जिसमें न्यूनतम दस परिवार आते हो, का सामाजिक, सांस्कृतिक,ऐतिहासिक और आर्थिक सर्वेक्षण परियोजना तैयार की जाती है।
हिंदी सेवी संस्थाओं का सर्वेक्षण	इसमें हिंदी भाषा और साहित्य के लिए काम कर रहे कुछ संस्थाओं का सर्वेक्षण किया जाता है।
हिंदी रंगमंच	इसमें हिंदी रंगमंच का आरंभ और विकास को बताया गया है।इसकी विशेषताएं,परंपरा एवं चिंतन तथा सिद्धान्तों की जानकारी दी गई है।